

3 May 2019 The Hindu

## The Gender ladder to socio-economic transformation

### संदर्भ

- भारत के चुनाव के बीच उल्लेखनीय मामलों में एक मुद्दा है, महिलाओं के रोजगार पर ध्यान केंद्रित करना। विभिन्न पार्टियों के घोषणापत्रों में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में अधिक आजीविका के अवसर पैदा करने के उपायों की बात की गई है। जिसमें अधिक महिलाओं को रोजगार देने के लिए व्यवसायों को प्रोत्साहन देना शामिल है।

### भागीदारी के आँकड़े-

- वर्तमान में भारत में कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी विश्व स्तर पर सबसे कम है। भारत में महिला श्रम शक्ति भागीदारी दर - 2011-12 में 31.2% से गिरकर 2017-18 में 23.3% हो गई।
- यह गिरावट ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक है जहां 2017-18 में महिला भागीदारी 11 प्रतिशत कम हुई है।
- सामाजिक वैज्ञानिकों ने इस कम होते भागीदारी प्रतिशत को महिलाओं के शिक्षा के बढ़ते स्तर के जोड़कर देखा है। क्योंकि शिक्षा के बढ़ने से योग्यता के अनुसार, रोजगार की चाह में भागीदारी कम हो जाती है।
- घर के बाहर काम करने वाली महिलाओं की कम सामाजिक स्वीकार्यता, सुरक्षित कार्यस्थलों का आभाव, गरीब और असमान मजदूरी के व्यापक प्रसार, योग्यता के अनुरूप नौकरियों की कमी आदि के कारण महिलाओं की भागीदारी कम हो रही है।
- भारत में अधिकांश महिलाएं ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि में निर्वाह स्तर के काम में लगी हुई हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों में घरेलू कार्य और लघु विनिर्माण उद्योग जैसे कम भुगतान वाली नौकरियों में लगी हुई हैं। बेहतर शिक्षा के साथ महिलाएं आकस्मिक मजदूरी या कृषि कार्यों को करने से इंकार कर देती हैं।

### शिक्षा और कार्य

- हाल ही में किए गए अध्ययन में शिक्षा स्तर और कृषि एवं गैर कृषि मजदूरी कार्य में परिवारिक कृषि कार्यों की भागीदारी के बीच नकारात्मक संबंध देखा गया है। अनिवार्य रूप से उच्च शिक्षा प्राप्त महिलाएं व्यक्तिगत श्रम ऐसा श्रम जो उनकी योग्यता से कम हों नहीं करना चाहती हैं।
- एक अनुमान के अनुसार, 25 से 59 वर्ष की आयु वर्ग में किसानों, कृषि कार्यों, मजदूरी, सेवा कर्मियों के रूप में लगभग एक तिहाई महिलाएं हैं, जबकि पेशेवरों, प्रबंधकों, लिपिक कार्यों के बीच महिलाओं का अनुपात केवल 15 प्रतिशत है।
- हालांकि सर्वेक्षण में पाया गया कि मामला यह नहीं है कि महिलाओं की श्रम बल में भागीदारी कम है, या वो कार्य से पीछे हट रही हैं बल्कि वे ऐसे काम के लिए समर्पित हैं, जो कर्तव्य मानकर वे कर रही अवैतनिक कार्य हैं तथा इसमें चाइल्डकेयर, बुर्जुओं की देखभाल, घरेलू कार्य शामिल हैं। इन सामाजिक व पारिवारिक कार्यों की जिम्मेदारी अनिवार्य रूप से महिलाओं पर ही होती है।
- इसके अलावा कृषि, पशुपालन, गैर इमारती लकड़ी के उत्पादन में महिलाओं के योगदान का महत्वपूर्ण हिस्सा शामिल है। जिस पर अधिकांश घरेलू उत्पादन और खपत आधारित है।
- सरकार को महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण और आजीविका के समान उपयोग को सुनिश्चित करना गंभीर चुनौती है जो अवैतनिक कम आय वाले और कम भुगतान किए कार्यों से संबंधित हैं।
- इस दोतरफा दृष्टिकोण को सार्वजनिक सेवाओं को प्रदान करके, कार्य की दशाओं में भेदभाव को दूर करके, समान वेतन सुनिश्चित करके और सार्वजनिक स्थलों में महिलाओं की सुरक्षा को सुनिश्चित करके दूर किया जा सकता है।
- महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने हेतु अवैतनिक कार्यों की पहचान करना, कार्यों का पुनर्वितरण करना और समान पारिश्रमिक शामिल है। दलित व आदिवासी समुदायों की महिलाओं की भागीदारी हेतु ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।
- कार्य स्थल पर मुफ्त और सुलभ शौचालय, घरेलू पानी के कनेक्शन, सार्वजनिक परिवहन की व्यवस्था सुनिश्चित करना, बिजली व्यवस्था, सीसीटीवी कैमरे सार्वजनिक स्थलों पर महिलाओं के खिलाफ हिंसा को रोकना शामिल है।
- इसके अलावा उचित और सभ्य जीवन और मातृत्व लाभ, बीमारी, भविष्य निधि और पेंशन सहित सामाजिक सुरक्षा

प्रदान करके महिलाओं की भागीदारी बढ़ाई जा सकती है।

- महिला श्रमिकों के लिए सामाजिक आवास स्थान भी आवंटित करना चाहिए जिसमें किराए के आवास और छात्रावास शामिल हैं।

### कृषक के रूप में मान्यता

- महिलाओं द्वारा कृषि व मत्स्य पालन जैसे क्षेत्रों में किए जाने वाले अवैतनिक और कम भुगतान वाले कार्यों की गणना और पुनर्मूल्यांकन करने की आवश्यकता है।
- राष्ट्रीय नीति के अनुसार महिला किसानों को कृषकों के रूप में मान्यता देना चाहिए इसमें कृषक, खेतिहर मजदूर, वनकर्मी, मत्स्य पालन, श्रमिक आदि श्रेणी शामिल हो, और भूमि पर उनके समान अधिकार और क्रेडिट बाजारों को विस्तार जैसी सेवाओं की पहुंच सुनिश्चित हो।
- महिलाओं के द्वारा घरेलू कार्यों को पहचानने और उनके पुनर्वितरण की आवश्यकता को दोहराया जाता है आवश्यकता है कि नीति निर्माताओं द्वारा उन संरचनात्मक मुद्दों का आकलन किया जाए जो महिलाओं को कार्यबल में प्रवेश करने से रोकती हो। साथ ही अधिक नौकरियों की घोषणा करने के अलावा सामाजिक आर्थिक परिवर्तन के लिए प्रयास करना चाहिए।

### फ्रांस सर्वोच्च नागरिक सम्मान

- भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के पूर्व चेयरमैन ए एस किरण कुमार को फ्रांस ने अपना सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'शेवेलियर डी एल ऑर्डर नेशनल डी ला लीजेंड ऑनर' सम्मान से सम्मानित किया है।
- फ्रांस का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत-फ्रांस अंतरिक्ष सहयोग के विकास में एएस किरण कुमार के अमूल्य योगदान को मान्यता देता है।
- 'शेवेलियर डी एल ऑर्डर नेशनल डी ला लीजेंड ऑनर' 1802 में नेपोलियन बोनापार्ट ने शुरू किया था। यह फ्रांस का सर्वोच्च नागरिक सम्मान है। यह उन लोगों को दिया जाता है जो देश के लिए विशिष्ट कार्य करते हैं। इस सम्मान को अन्य देशों के नागरिकों को भी दिया जाता है।
- इस पुरस्कार से अभिनेता शाहरुख खान और अमिताभ बच्चन को साल 2007 और साल 2014 में सम्मानित किया गया था। इस पुरस्कार से अमर्त्य सेन, रवि शंकर, जुबिन मेहता, लता मंगेशकर, जेआरडी टाटा तथा रतन टाटा जैसे भारतीय नागरिकों को 'लीजेंड ऑनर' से सम्मानित किया जा चुका है।
- यह पुरस्कार किरण कुमार को दोनों देशों के अंतरिक्ष सहायोग में विशिष्ट योगदान के लिए दिया गया है।
- ए एस किरण कुमार भारत के एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक हैं। वे साल 2015 से साल 2018 तक इसरो के चेयरमैन रहे थे।

### चंद्रयान-2

- भारत के दूसरे चंद्र अभियान चंद्रयान-2 के आर्बिटर, लैंडर (विक्रम) और रोवर (प्रज्ञान) तीन माड्यूल हैं।
- आर्बिटर और लैंडर माड्यूल को यंत्रवत् रूप से मिलाकर एक एकीकृत माड्यूल के रूप में साथ जोड़ा जाएगा और इसके बाद जीएसएलवी एमके-तीन प्रक्षेपण यान के अंदर समायोजित कर दिया जाएगा।
- रोवर को लैंडर के अंदर रखा गया है। चंद्रयान-2 को जीएसएलवी एमके-3 प्रक्षेपण यान द्वारा पृथ्वी की कक्षा में स्थापित किए जाने के बाद एकीकृत माड्यूल प्रणोदक माड्यूल की मदद से चंद्रमा की कक्षा में पहुंच जाएगा।
- इसके बाद लैंडर आर्बिटर से अलग होकर चंद्रमा के दक्षिणी सिरे में पूर्व निर्धारित स्थल पर धीरे से उतर जाएगा। चंद्रमा की सतह पर उतरने के बाद रोवर वहां वैज्ञानिक प्रयोग शुरू कर देगा। इसके लिए लैंडर और आर्बिटर में सभी तरह के वैज्ञानिक उपकरण लगाए गए हैं।